04-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - इस बेहद के ड्रामा में हीरो हीरोइन का पार्ट तुम्हारा है, बाप का नहीं, बाप के पास सिर्फ पतितों को पावन बनाने का हुनर है"

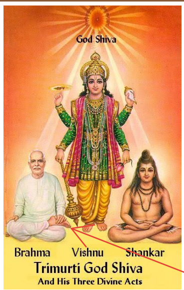

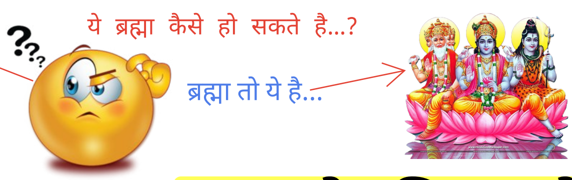

प्रश्नः-ब्रह्मा के चित्र को देख जो प्रश्न उठाते हैं, उन्हें कौन सा राज़ समझाना है?

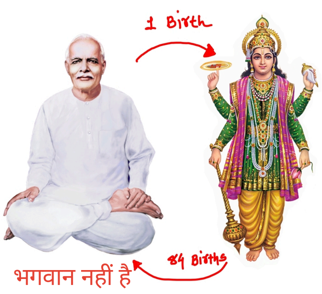

उत्तर:-उन्हें समझाओ कि यह आदि सो अन्त वाली आत्मा है। जो फर्स्ट प्रिन्स श्रीकृष्ण है, उनके ही लास्ट जन्म में बाप आते हैं। यह पतित तन है, इन्हें ही पावन बनना है। यह कोई भगवान नहीं। भगवान तो एवर-प्योर है। उसने इनके तन का आधार लिया है।

गीत:-मुखड़ा देख ले प्राणी... Click

मुखड़ा देख ले, दर्पण ले
मुखड़ा देख ले, प्राणी ज़रा दर्पण में हो
देख ले कितना पाप है, कितना पुण्य तेरे जीवन में
देख ले दर्पण में
मुखड़ा देख ले, प्राणी ज़रा दर्पण में

कभी तो पल भर सोच ले प्राणी, क्या है तेरी करम कहानी
कभी तो पल भर सोच ले प्राणी, क्या है तेरी करम कहानी
पता लगा ले
पता लगा ले पड़े हैं कितने दाग तेरे दामन में
देख ले दर्पण में
मुखड़ा देख ले, प्राणी ज़रा दर्पण में

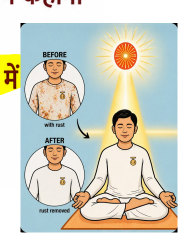

झूठ को धोखा दे मत बन्दे, अच्छे ना होते कपट के धन्धे
झूठ को धोखा दे मत बन्दे, अच्छे ना होते कपट के धन्धे
सदा ना चलता
सदा ना चलता किसी का नाटक दुनिया के आँगन में
देख ले दर्पण में
मुखड़ा देख ले, प्राणी ज़रा दर्पण में
देख ले कितना पाप है, कितना पुण्य तेरे जीवन में
देख ले दर्पण में
मुखड़ा देख ले, प्राणी ज़रा दर्पण में

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

04-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। बाप ने बच्चों को समझाया है कि शान्ति के लिए कोई बाहर दर-दर धक्का नहीं खाना है। जैसे हठयोगी संन्यासी समझते हैं - गृहस्थ व्यवहार में रहते शान्ति मिल नहीं सकती। शान्ति जंगल में मिलती है। परन्तु बाप समझाते हैं शान्ति वहाँ भी नहीं मिल सकती। इस पर एक कहानी वा दृष्टान्त सुनाते हैं कि रानी के गले में हार पड़ा था और ढूँढती थी बाहर.... ऐसे शान्ति तो तुम्हारे गले में पड़ी है। बाहर कहाँ ढूँढते हो। बाप आकर समझाते हैं बच्चे, तुम आत्मा का स्वधर्म है ही शान्त। यह शरीर तो तुम्हारी कर्मेन्द्रियां हैं, जिससे तुमको पार्ट बजाना पड़ता है। आत्मा तो अविनाशी है। आत्मा कोई छोटी-बड़ी नहीं होती है, न विनाश होती है। हाँ आत्मा पतित बनती है, इनको ही पावन बनना होता है। आत्मा को पहले किशोर शरीर मिलता है फिर युवा, बृद्ध होता है। आत्मा तो है ही एकरस। पहले-पहले तो आत्मा को जानना होता है। मैं आत्मा ही बैरिस्टर आदि बनता हूँ। इसको कहा जाता है - आत्म-अभिमानी भव। बाप समझाते हैं बच्चे तुम देह-अभिमानी बन पड़े हो इसलिए अपने को शरीर समझ लेते हो, यह भूल जाते हो कि मैं आत्मा हूँ, यह

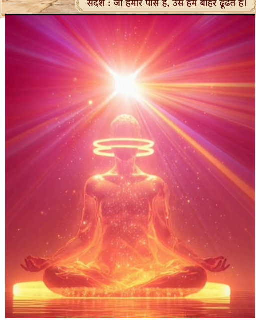

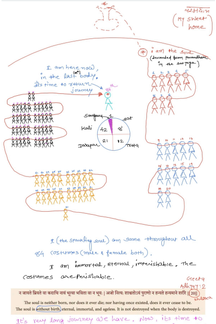

मेरा शरीर है। तो अपने को रियलाइज करना है। 84 जन्म भी आत्मा लेती है। अभी बाप ने समझाया है जो ब्राह्मण बने हैं वही फिर देवता बनने वाले हैं। ऐसे भी नहीं कि सब 84 जन्म लेते हैं। कोई पहले आयेगा, कोई 50-100 वर्ष बाद भी आते रहेंगे। कोई के 80-82, कोई के कितने जन्म होंगे। मनुष्य तो 84 लाख जन्म कह देते हैं, इनसे भी सैटिस्फाई नहीं होते हैं फिर कह देते कण-कण में भगवान है। अब भगवान कहते हैं कि मैं किसी मनुष्य तन में भी नहीं हूँ तो जानवर, पत्थर ठिक्कर कण-कण में कैसे होगा। बाप ने समझाया है नम्बरवन ही लास्ट नम्बर में तमोप्रधान बनते हैं। मैं खुद कहता हूँ कि मैं बहुत जन्मों के अन्त में साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं वह तो जरूर पतित होगा। पावन तो हो नहीं सकता। बाप खुद कहते हैं पहले नम्बर में है श्रीकृष्ण, फर्स्ट प्रिन्स। श्री नारायण तो बाद में बनता है, जब बड़ा होता है। वह भी 20-25 वर्ष कम हो जाते हैं। उनके भी पूरे 84 जन्म नहीं कहेंगे। नम्बरवन है श्रीकृष्ण। भल वही फिर स्वयंवर बाद नारायण बनते हैं। परन्तु हिसाब तो बच्चों को करना है ना। पूरे 84 जन्म, 5 हजार वर्ष श्रीकृष्ण के

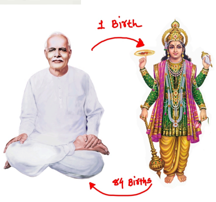

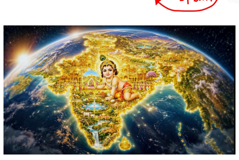

1st No.

ही कहेंगे। तो बाप बैठ समझाते हैं मैं कल्प-कल्प उसी ही तन में आता हूँ, जिसका आदि से लेकर अन्त तक पार्ट है। दूसरे कोई में आ नहीं सकता हूँ। हिसाब है ना। ब्रह्मा ही पहला नम्बर ठहरा। मैं और कोई में आ कैसे सकता। तुमसे बहुत लोग पूछते हैं सिर्फ एक ही ब्रह्मा में क्यों आते हैं! परन्तु यह हिसाब है ना। यह समझने की बातें हैं। गाया भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। विष्णु वा शंकर द्वारा स्थापना नहीं करते। यह और कोई का काम नहीं है। मनुष्य रचता और रचना को नहीं जानते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। बनी बनाई बन रही... चिंता ताकी कीजिये... यह अभी की बात है, जो होनी है वही होती है। वह बदल नहीं सकती। आज जो कुछ होता है फिर 5 हजार वर्ष बाद होगा। बाबा ने समझाया भी था - कोई भी बात ऐसी देखो तो बोलो यह कोई नई बात नहीं। 5 हजार वर्ष पहले भी हुआ था। एकदम ऐसा लिख दो। फिर भल वह आकर पूछे, लिखने में कोई हर्जा नहीं है। यह लड़ाई पहले लगी थी, नथिंग न्यू। महाभारत की लड़ाई 5 हजार वर्ष पहले भी हुई थी। क्रिश्चियन ने भारत में आकर राज्य छीना, नथिंग न्यू। फिर कल्प बाद भी ऐसे ही होगा।

Nothing New

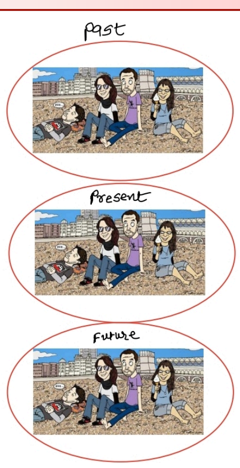

Points: ज्ञान योग M.imp.

04-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती रहती है। अब फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। जिनके 84 जन्म पूरे हुए हैं वही पहले नम्बर में लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। यह सब राज़ बाप ही बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं - मैं मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ, इनको उल्टा झाड़ कहा जाता है। इस कल्प वृक्ष की आयु 5 हजार वर्ष है। स्वास्तिका में 4 भाग एक जैसे देखेंगे। युग भी इक्वल हैं, उसमें फ़र्क नहीं पड़ता।

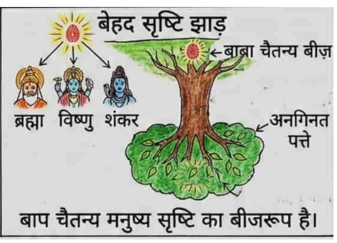

ॐ

अथ पञ्चदशोऽध्याय:

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमध:शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥

श्रीभगवान् बोले—आदिपुरुष परमेश्वररूप मूलवाले[१] और ब्रह्मारूप मुख्य शाखावाले[२] जिस संसाररूप पीपलके वृक्षको अविनाशी[३] कहते हैं, तथा वेद

१. आदिपुरुष नारायण वासुदेवभगवान् ही नित्य और अनन्त तथा सबके आधार होनेके कारण और सबसे ऊपर नित्यधाममें सगुणरूपसे वास करनेके कारण ऊर्ध्व नामसे कहे गये हैं और वे मायापति, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ही इस संसाररूप वृक्षके कारण हैं, इसलिये इस संसार-वृक्षको 'ऊर्ध्वमूलवाला' कहते हैं।

२. उस आदिपुरुष परमेश्वरसे उत्पत्तिवाला होनेके कारण तथा नित्यधामसे नीचे ब्रह्मलोकमें वास करनेके कारण, हिरण्यगर्भरूप ब्रह्माको परमेश्वरकी अपेक्षा 'अध:' कहा है और वही इस संसारका विस्तार करनेवाला होनेसे इसकी मुख्य शाखा है, इसलिये इस संसारवृक्षको 'अध:शाखावाला' कहते हैं।

३. इस वृक्षका मूल कारण परमात्मा अविनाशी है तथा अनादिकालसे इसकी परम्परा चली आती है, इसलिये इस संसारवृक्षको 'अविनाशी' कहते हैं।

* अध्याय १५ * १९१

जिसके पत्ते[१] कहे गये हैं—उस संसाररूप वृक्षको जो पुरुष मूलसहित तत्त्वसे जानता है, वह वेदके तात्पर्यको जाननेवाला है[२]॥ १॥

नेपाल त्रासदी : मृतकों की संख्या 768 हुई, करीब 2,500 लोग अब भी लापता

- सुरंग में फंसे लोगों को बचाने का अभियान तेज
- भोटेकोशी नदी का जलस्तर फिर बढ़ा, सतर्कता बरतने की सलाह

सुरंग में फंसे लोगों के बचाव अभियान में जुटे नेपाली सेना का जवान

काठमांडू : नेपाल में आई भीषण बाढ़ में मरने वालों की संख्या रविवार को बढ़कर 781 हो गई, जबकि 2,500 से ज्यादा लोग अब भी लापता हैं। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि प्रभावित सभी आठ जिलों से शव बरामद किए गए हैं। आपदा के पांचवें दिन भी बचावकर्मी लापता लोगों की तलाश में लगे हैं, साथ ही फंसे हुए लोगों को निकालने का अभियान भी जारी है। ■ शेष पृष्ठ 11 पर

भारत ने 68.5 टन राहत सामग्री, बेली ब्रिज व सुरंग संबंधी विशेषज्ञ भेजे

काठमांडू : भारत ने बाढ़ प्रभावित नेपाल को 68.5 टन राहत सामग्री उपलब्ध कराई है और खोज तथा बचाव अभियानों में सहायता के लिए तकनीकी टीम, फॉरेंसिक विशेषज्ञ और उपकरण भेजे हैं। भारतीय दूतावास ने यह जानकारी दी। काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास ने शनिवार को जारी एक बयान में कहा कि भारत ने एक विशेषज्ञ तकनीकी दल भेजा है, जिसमें सुरंग संबंधी विशेषज्ञ और खोज एवं बचाव अभियानों के लिए सहायक उपकरण शामिल हैं। यह सहायता उन जलविद्युत सुरंगों के लिए भेजी गई है जहां बुधवार को आई ■ शेष पृष्ठ 11 पर

बाप समझाते हैं कि देखो दुनिया में तो क्या-क्या हो रहा है। कोई मून में जाते, कोई आग पर, कोई पानी पर चलना सीखते हैं। यह सब है फालतू, इससे कोई भी फायदा नहीं। मनुष्य पावन बन मुक्ति-जीवनमुक्ति में तो जा नहीं सकते। कुछ भी करें परन्तु वापिस घर जा नहीं सकते। आत्मा को अपना घर और बाप का घर भूल गया है। आत्मा अपने को ही भूल देह-अभिमानी बन पड़ी है। फिर मन्दिरों में जाकर महिमा गाते हैं। आप सर्वगुण सम्पन्न, हम नींच पापी

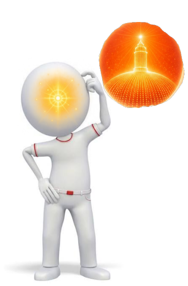

तुम करुणा के सागर,
तुम पालनकर्ता।
स्वामी तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख खल कामी,
कृपा करो भर्ता॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

विषय विकार मिटाओ,
पाप हरो देवा।
स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,
सन्तन की सेवा॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

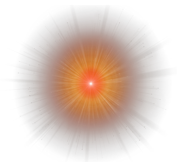

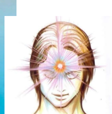

हैं। अपनी ग्लानी करते हैं। बाप तो कभी पुजारी नहीं बनते। अच्छा फिर सेकेण्ड नम्बर में कहेंगे शंकर भी एवर पूज्य है। वह भी पुजारी नहीं बनते, उनका पार्ट ही यहाँ नहीं है। इस स्टेज पर पार्ट है ब्रह्मा और विष्णु का। ब्रह्मा और विष्णु का क्या-क्या पार्ट है, यह दुनिया में किसको भी पता नहीं है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह देते हैं, अर्थ कुछ भी नहीं समझते। यह भी गाते हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना, कौन करते हैं, उनका चित्र ही नहीं। मुख से कहते हैं परन्तु वह कहाँ है। शिव क्या चीज़ है, वह भी नहीं जानते। आत्मा के लिए कहते हैं भ्रकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा... मैं आत्मा अविनाशी हूँ, शरीर विनाशी है। कितने शरीर लेते हैं, कुछ भी पता नहीं। मनुष्य कितने दु:खी हैं, रड़ियां मारते रहते हैं - ओ गॉड फादर। जबसे दु:ख शुरू हुआ है, पुकारते आये हैं। यह भी समझाया गया है भारत में जब रावण राज्य शुरू होता है तो ऐसे नहीं और धर्मों में भी रावणराज्य हो गया। नहीं, उनको तो अपने समय पर सतो रजो तमो में आना ही है। यह कहानी सारी भारत पर है। वह तो बाईप्लाट हैं। बाप बीच में ही आते हैं। भारत जब तमोप्रधान बन जाता है तो फिर सारा झाड़

सोचो तुमको कौन मिला है, कौन तुम्हारा साथी है।

most imp to understand

समझा?

Example:- Majority of film stars, billionairs, Pop stars, world leaders, influencers etc

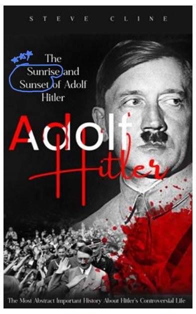

Just for Example

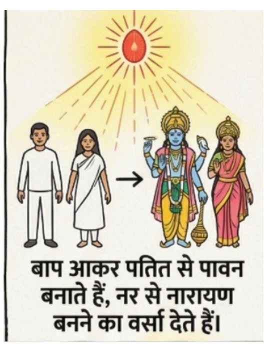

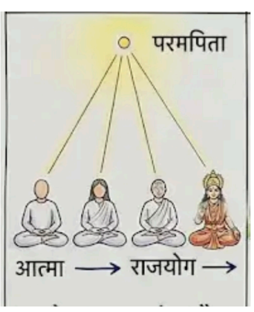

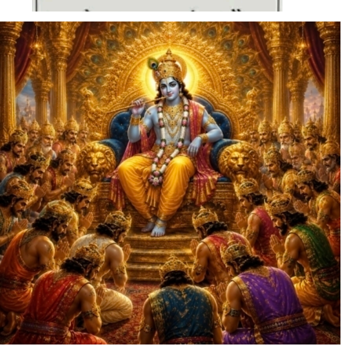

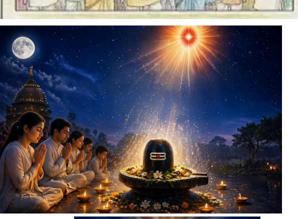

तमोप्रधान बन जाता है। उनको भी सुख दु:ख भोगना है। झाड़ में नये-नये पत्ते निकलते हैं। वह बड़े शोभनिक होते हैं। नयों को फिर सतो रजो तमो में जरूर आना है। पिछाड़ी में जो आते हैं उनका कुछ मान रहता है। (Most imp) (Point to be Noted) एक जन्म में भी सतो रजो तमो से पास कर सकते हैं, परन्तु उनकी कोई वैल्यु नहीं रहती। वैल्यु तो उनकी है जो हीरो-हीरोइन का पार्ट बजाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे बाबा ही हीरो-हीरोइन का पार्ट बजाते हैं। (Point to be Noted) बाबा के लिए नहीं कह सकते हैं। वह तो आकर पतितों को पावन बनाते हैं। खुद पतित नहीं बनते हैं। तुम पतित से पावन बनने की मेहनत करते हो। श्रीमत पर राजयोग से ही राज्य लिया था। अभी तुम फिर ले रहे हो। बाबा कहते हैं - मैं तो राज्य नहीं करता हूँ, तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। अब दुनिया में मनुष्य कहते तो बहुत हैं। भगवानुवाच - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। परन्तु उनका अर्थ न खुद समझते हैं, न किसको समझा सकते हैं। भगवानुवाच, तो जरूर भगवान आया था तब तो कहा होगा ना हे बच्चों, भारत में ही शिव जयन्ती, शिव रात्रि मनाते हैं। बाप आते भी हैं भारत खण्ड में। भारत ही अविनाशी खण्ड है। उनकी

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

महिमा बहुत भारी है। जैसे बाप की महिमा अपरमअपार है। वैसे भारत की महिमा भी अपरमअपार है। भारत में ही परमपिता परमात्मा आकर सब मनुष्य मात्र की सद्गति करते हैं। सबको सुख देते हैं। उनका बर्थ प्लेस भारत है। भारत ही प्राचीन देश है। भगवान राजयोग सिखलाने भारत में ही आया था। परन्तु श्रीकृष्ण को भगवान कह देने से उनकी महिमा नहीं रही है। भगवान तो है ही एक, उनको ही सतगुरू कहा जाता है। बाकी गुरू तो ढेर हैं। कोई धन्धा सिखलाने वाले को भी गुरू कह देते हैं। आजकल तो सबको अवतार मान लेते हैं। कुछ भी समझते नहीं। जब बिल्कुल पतित बन जाते हैं तब पुकारते हैं - बाबा आकर हमको पावन बनाओ।

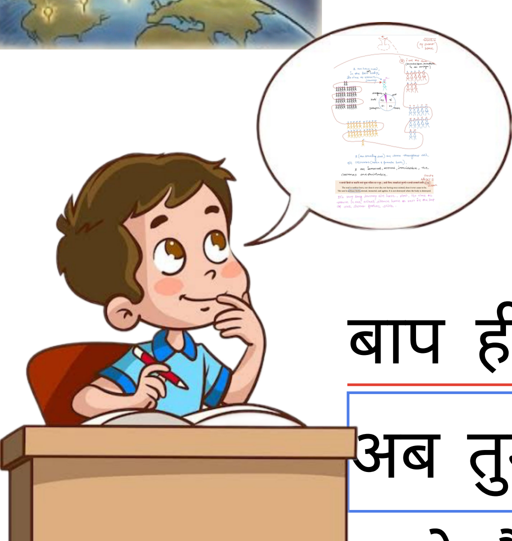

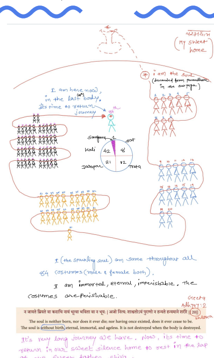

बाप ही आकर सच्ची-सच्ची अमरकथा सुनाते हैं। अब तुम्हारी बुद्धि में है कि हम 84 जन्मों में कैसे आते हैं। पहले अच्छा जन्म फिर उतरते आयेंगे। दुनिया की भी उतरती कला होती है। मनुष्यों की बुद्धि सतो, रजो, तमो बनती है। सतयुग से फिर

Point to be Noted

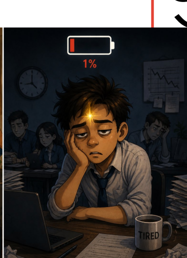

दुनिया में आजकल मेजॉरिटी आत्माएं ऐसे ही सोचती हैं कि कौन देखने वाला है हम चाहे कुछ भी करें। वह यह नहीं जानती की यह सृष्टि नियमों से चलती है और इसी कारण वो उन नियमों को अपने स्वार्थ वश फटाफट ब्रेक करके अपनी ऊर्जा को क्षीण करती जाती हैं। अवश्य ही छोटे-छोटे किस्तों में मिलने वाली जो प्राप्ति होगी वह उसको एक साथ मिलेगी(उस आत्मा की ऊर्जा के भोग पर) जो दूसरों को भी देखने में आएगी, और दूसरी आत्माएं भी उसके इस गलत मार्ग का अनुसरण करेगी(वह सोचेगी कि देखो गलत करने में कितना फायदा है, ईमानदारी में कुछ नहीं रखा इत्यादि...)और वह भी खड्डे में गिरेगी।

थोड़ी-थोड़ी उतरती कला शुरू हो जाती है। चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला। सर्व का सद्गति दाता तो एक बाप है ना। वो गुरू लोग तो सिर्फ शास्त्र सुनाते हैं। सुनते-सुनते गिरते ही आये हैं। बेहद का बाप आकर बच्चों से पूछते हैं, मैं तुमको इतना साहूकार बनाकर गया, इतने हीरे-जवाहरों के महल देकर गया, वह सब कहाँ गये? लौकिक बाप बच्चों को पैसे देते हैं लेकिन बच्चे पैसा बरबाद कर देते हैं तो बाप बुलाकर पूछते हैं तुमने इतना पैसा कहाँ बरबाद किया? बच्चों के पास पैसे होने से उड़ाते बहुत हैं। बाप धर्मात्मा है, बच्चे विलायत में जाकर लाखों रूपये उड़ा आते हैं। बाप कुछ कर नहीं सकता। बाप फारकती भी नहीं दे सकते क्योंकि दादे की मिलकियत है। परन्तु अन्दर जलते रहते हैं। बाप के मर जाने के बाद, कोई-कोई तो ऐसे गन्दे बच्चे होते हैं, 12 मास में सारी मिलकियत उड़ा देते हैं। वह हैं हद की बातें। यह है फिर बेहद की बात। बेहद का बाप कहते हैं तुम कितने धनवान थे, विश्व के मालिक थे। फिर कंगाल क्यों बने हो? इतना धन कहाँ किया? बच्चों से ही बाप पूछते हैं - भारत को इतना साहूकार बनाया, सब पैसे कहाँ गये? फिर

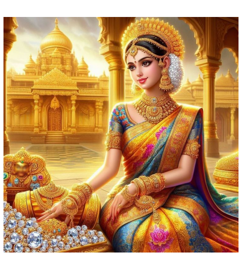

बाप ही बैठ समझाते हैं। भक्ति मार्ग में कितना खर्चा करते हैं। शास्त्रों आदि के पिछाड़ी कितना खर्चा करते हैं। माथा भी टेकते गये, टिप्पड़ भी घिस गई। पैसे आदि सब कुछ गँवा बैठे, यह है ड्रामा। हम तुमको साहूकार बनाते हैं। रावण तुमको कंगाल बनाते हैं। भारतवासियों को ही बाप समझायेंगे ना। भारत ही सोने की चिड़िया थी, इतना धन था जो दूसरे धर्म वाले लूटकर ले गये। ख्याल तो करो - भारत क्या था! यह भी ड्रामा बना हुआ है। भारत ही हेविन, भारत ही हेल। अभी है नर्क, इसलिए बाबा ने सीढ़ी भी ऐसी बनवाई है जो कोई भी समझे हम पतित हैं। छोटे-छोटे बच्चों को भी चित्र पर समझाया जाता है ना। नक्शे बिगर बच्चे क्या समझें। बाप ही आकर पतित से पावन बनने की सहज युक्ति बताते हैं। सहज ते सहज भी है, डिफीकल्ट से डिफीकल्ट भी है। सतयुग में देही-अभिमानी रहते हैं। आत्मा समझती है अब शरीर बड़ा हुआ है, यह पुराना चोला छोड़ दूसरा लेना है। जैसे साक्षात्कार हो जाता है - अब जाकर बच्चा बनना है, पुरानी खल छोड़ देते हैं। यहाँ कोई मरता है तो रोते भी हैं। बैण्ड बाजा भी ले जाते। सतयुग में तो खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा

Point to be Noted

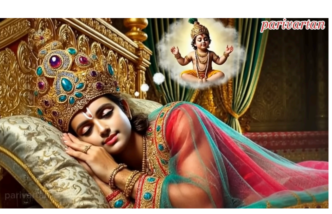

लेते हैं, तो शादमाना मनाते हैं। यहाँ कितना अफसोस करते हैं। कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। तो इसका मतलब नर्क में था ना! अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो - स्वर्गवासी बनने के लिए। बाप तुमको स्वर्गवासी बनाते हैं। बाप आते ही हैं जीवनमुक्ति देने। रावण के बन्धन से छुड़ाए जीवनमुक्त करते हैं। बाप कहते हैं - मैं कल्प पहले मुआफिक आकर राजयोग सिखलाता हूँ। कल्प-कल्प ब्रह्मा के ही तन में आता हूँ। तुमको ब्राह्मण जरूर बनना है। यज्ञ में ब्राह्मण तो जरूर चाहिए ना। यह है राजस्व अश्वमेध अविनाशी ज्ञान यज्ञ। इस रथ को स्वाहा करना है। अश्व इस रथ को कहा जाता है। राजस्व, स्वराज्य के लिए यह सब अश्व (शरीर) इसमें स्वाहा होने हैं। आत्मा तो स्वाहा नहीं होगी। आत्मायें हिसाब-किताब चुक्तू कर चली जायेंगी। फिर नयेसिर सबका पार्ट शुरू होगा। इनको कहा जाता है हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट। बाप आते ही है नई दुनिया स्थापन कर पुरानी दुनिया खलास करने। यह एक ही महाभारत लड़ाई है, जो शास्त्रों में गाई हुई है। तो समझाना चाहिए - इस लड़ाई से यह स्वर्ग के द्वार खुलते हैं, इसलिए इनका गायन शास्त्रों में है। अच्छा!

Simple Logic

04-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलध बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों का नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) बीती बातों का कभी भी चिन्तन नहीं करना है। जो बात बीत गई, नथिंग न्यु समझ भूल जाना है।

2) इस राजस्व अश्वमेध यज्ञ में अपना तन-मन-धन सब स्वाहा कर सफल करना है। इस अन्तिम जन्म में सम्पूर्ण पावन बनने की मेहनत करनी है।

ज्ञान योग

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

04-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा प्रवृत्ति को प्रगति का साधन बनाने वाले सदा समर्थवान भव

Finale Achievement

प्रवृत्ति में पहले वृत्ति से पवित्र वा अपवित्र बनते हो। यदि वृत्ति को सदा एक बाप के साथ लगा दो, एक बाप दूसरा न कोई - ऐसी ऊंची वृत्ति रहे तो प्रवृत्ति प्रगति का साधन बन जायेगी।

ये तो पक्का कर लो..

वृत्ति ऊंची और श्रेष्ठ है तो चंचल नहीं हो सकती।

ऐसी श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा प्रगति करते हुए गति-सद्गति को सहज ही पा लेंगे।

फिर सब कम्पलेन कम्पलीट हो जायेंगी।

स्लोगन:-अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है तो निश्चय का फाउण्डेशन कच्चा है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

04-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे -

Call of time/समय की पुकार

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

जब आप चमकते हुए सितारे - सूर्य, चन्द्रमा समान अपनी सम्पूर्ण स्टेज पर अथवा मास्टर दातापन की स्टेज पर स्थित होंगे

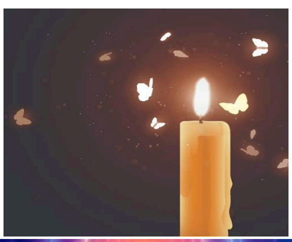

तो भटकती हुई आत्मायें, ढूंढने वाली आत्मायें परवानों की तरह स्वत: ही पाने के लिए, मिलने के लिए फास्ट गति से आपके पास आयेंगी

Feel the Responsibility

within a second

और आप सबको सेकण्ड में बाप द्वारा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार दिलाने की तीव्रगति से सेवा करनी पड़ेगी।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

11.9 अपने फ़रिश्ते स्वरूप द्वारा साक्षात्कार कराओ :

मनसा सेवा पॉवरफुल कैसे हो — इसका विशेष प्लान बनाओ। वाचा के साथ-साथ मनसा सेवा भी बहुत दूर तक कार्य कर सकती है। ऐसे अनुभव होगा जैसे आजकल फ्लाइंग सॉसर देखते हैं वैसे आप सबका फ़रिश्ता स्वरूप चारों ओर देखने में आयेगा और आवाज़ निकलेगा कि "यह कौन हैं जो चक्र लगाते हैं!" इस पर रिसर्च करेंगे। लेकिन आप सबका साक्षात्कार ऊपर से नीचे आते ही हो जायेगा और समझेंगे यह वही ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं जो फ़रिश्ते रूप में साक्षात्कार करा रही हैं। अभी यह धूम मचाओ। विशेष अमृतवेले शरीर से डिटैच होकर अन्त:वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास करो। यह अभ्यास ज़रूरी है। ऐसा अभ्यास करो जो प्रैक्टिकल में सब देख कर मिल कर आये हैं। दूसरे भी अनुभव करें — हाँ, यह हमारे पास वही फ़रिश्ता आया था। फिर ढूँढ़ते निकलेंगे फ़रिश्तों को। अगर इतने सब फ़रिश्ते चक्र लगायें तो ऑटोमेटिकली सबका अटेन्शन जायेगा। तो अभी साकारी के साथ-साथ आकारी सेवा भी ज़रूर चाहिए।